अमेरिका में हिंदी शिक्षण

श्री अशोक ओझा

न्यू जर्सी के रटगर्स विश्वविद्यलय में संपन्न द्वितीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन अमेरिका में हिंदी प्रचार और हिंदी शिक्षण को सशक्त बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक घटना है। इस वर्ष अप्रैल 3 से 5 तक आयोजित इस सम्मेलन में भारत और अमेरिका और कनाडा के दो दर्जन से अधिक हिंदी कर्मियों ने भाषा शिक्षण की चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार विमर्श किया। सम्मेलन के अंतिम सत्र में, जिसकी अध्यक्षता न्यू यॉर्क में भारतीय कौंसुलाधीश माननीय ज्ञानेश्वर मुळे ने की, अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र स्थापित करने के लिए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए भारत सरकार से सहयोग की मांग की गयी। प्रस्तावित केंद्र स्कूल-कॉलेज में हिंदी पाठ्यक्रम के निर्माण से लेकर भारत और अमेरिका के संस्थानों के बीच समंवय करने की दिशा में एक केंद्रीय शिक्षण और सांस्कृतिक संस्था के रूप में कार्य करेगा। इस केंद्र पर उत्तर और दक्षिण अमेरिका के समस्त भूभाग में हिंदी प्रचार-प्रसार को समृद्ध करने के लिए योजनाओं का निर्माण और उनपर अमल करने की ज़िम्मेदारी होगी। इसका संचालन हिंदी संगम प्रतिष्ठान के तहत हिंदी विद्वानों की सम्मति से होगा। भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कोंसुलाधीश सलाहकार समिति के स्थायी आमंत्रित सदस्य होंगे। रटगर्स विश्वविद्यालय और हिंदी संगम के बीच घनिष्ट सहयोग कायम करने के लिए प्रयास जारी है। सम्मेलन में कई सुझाव पेश किये गए जिनका उद्देश्य हिंदी शिक्षण को उच्चस्तरीय बनाने और उसके तकनीकी स्वरूप को निखारना है।

इक्कीसवी सदी में अमेरिकी सरकार की भाषा नीति में मूलभूत बदलाव भी हिंदी की प्रतिष्ठा और उसकी शिक्षा को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण कारण है। सन् 2006 में जब वाइट हॉउस ने हिंदी को राष्ट्रीय वाणिज्य और सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण विदेशी भाषाओं के श्रेणी में शामिल किया तब से यहाँ हिंदी पठन-पाठन का एक आंदोलन जैसा प्रारंभ हो गया। राष्ट्रीय सुरक्षात्मक भाषाई पहल (नेशनल सिक्योरिटी लैंगुएज इनिशिएटिव) नामक इस उच्च स्तरीय कार्यक्रम के अंतर्गत उर्दू और पश्तो-दरी सहित एशिया और अफ्रीका की आधे दर्जन से अधिक भाषाओं को प्रमुखता की श्रेणी में शामिल किया। चूँकि हिंदी भाषी प्रवासियों की बड़ी संख्या इस देश में पहले से ही मौजूद थी, हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए व्यापक सामाजिक समर्थन पहले से उपलब्ध था। लेकिन इस समुदाय में अपनी भाषा और संस्कृति के लिए नई जागरूकता ज़रूरी थी। 2006 से पूर्व विदेशी भाषा की सूची में स्पेनिश के अतिरिक्त सिर्फ फ्रेंच, इटालियन, जर्मन जैसी यूरोपीय भाषाओं को ही विदेशी भाषा की श्रेणी में रखा गया था। अमेरिकी सरकार की नई भाषा नीति का तात्कालिक लाभ यह हुआ कि हिंदी को एक महत्वपूर्ण विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने के लिए अमेरिका की विदेशी भाषा अनुसंधान संस्थाओं द्वारा भाषा शिक्षा का संगठित प्रयास प्रारम्भ हुआ।

इक्कीसवी सदी के दूसरे दशक में आज अमेरिका की शिक्षा व्यवस्था में हिंदी एक महत्वपूर्ण स्थान पर विराजमान है। 2013 की अमेरिकी जनगणना के अनुसार, यहाँ हिंदी बोलने वाले आप्रवासियों की संख्या छः लाख से अधिक है। यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया के भाषाविद् दम्पति डॉ सुरेन्द्र और विजय गंभीर के अनुसार यदि अमेरिका के भारतीय मूल के उन आप्रवासियों की संख्या, जो कि आठ लाख के करीब है, जोड़ दें, जो कि हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं, तो हिंदी बोलने वालों की कुल संख्या बीस लाख से ऊपर चली जाएगी।

अमेरिका के प्रतिष्ठित आइवी लीग विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रमों को गंभीरता से लागू किया जा रहा है, चाहे वह हार्वर्ड हो, कोलंबिया या स्टैनफोर्ड, इन सभी संस्थानों में हिंदी और भारतीय संस्कृति से सम्बंधित विषयों को स्नातक पाठ्यक्रमों का अभिन्न अंग बनाया है। न्यू यॉर्क के कोलंबिया और न्यू यॉर्क विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा को भारतीय समुदाय की आशा-आकांक्षाओं के साथ जोड़ने की मौलिक गतिविधियों को अंजाम देने का कार्य किया गया है।

हिंदी शिक्षा के आधुनिकीकरण की दिशा में पिछले एक दशक से महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य है हिंदी को साहित्यिक ग्रंथों के परिधि से बाहर निकाल कर सामान्य जीवन से जोड़ना जिससे अमेरिका के हिंदी छात्र आजीवन हिंदी सीखने के लिए प्रेरित हो सकें। यही नहीं, हिंदी सीख कर भारत जाने वाले शोधार्थियों और स्नातकों के लिए व्यवहारिक ज्ञान ज़्यादा उपयोगी साबित हो रहा है।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास और पेनसिलवेनिया के भाषा शास्त्रियों द्वारा अपने हिंदी छात्रों को भारत भेज कर हिंदी समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराने के कार्यक्रम वर्ष दर वर्ष चलते रहे। उनके प्रयासों से आज दर्जनों विश्वविद्यालयों के हिंदी छात्र अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज़ के अनुभवी हिंदी प्राध्यापकों की देख-रेख में महीनों भारत में निवास कर हिंदी का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ वहाँ के सांस्कृतिक जीवन से रूबरू होते रहते हैं।

आज यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास का हिंदी उर्दू फ्लैगशिप कार्यक्रम और यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया के साउथ एशियाई स्टडीज़ विभाग का हिंदी कार्यक्रम फल फूल रहा है। हिंदी शिक्षण को विश्वविद्यालय परिसर से बाहर छोटे नगरों और कस्बों के स्कूलों में प्रविष्ट किया जा चुका है। जैसा कि भाषाविद् कहते हैं, किशोरवय और कम उम्र के बच्चों के पास नई भाषा सीखने के लिए लगनशीलता और मनःस्थिति दोनों ही भरपूर होती है। भाषा सीखने के उनके कारण भी निजी और भावुकता से प्रेरित होते हैं। दूसरे शब्दों में छोटे बच्चों को आजीवन भाषा विद्यार्थी बनने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। सरकारी प्रोत्साहनों और अनुदान की बदौलत टेक्सास और न्यू जर्सी के शिक्षा अधिकारियों ने स्कूलों में हिंदी पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए। आज न्यू जर्सी के एडिसन और टेक्सास के हर्स्ट-यूलेस स्कूल संकुल में हिंदी के

सशक्त कार्यक्रम वर्ग नौ से प्रारम्भ हो कर अब माध्यमिक स्कूलों की तरफ बढ़ रहे हैं। वह दिन शायद दूर नहीं जब प्रारंभिक विद्यालयों में भी हिंदी पढ़ाई जाने लगे।

स्कूल की कक्षाओं में हिंदी को प्रविष्ट कराने में हिंदी यू.एस.ए., हेरिटेज फाउंडेशन, युवा हिंदी संस्थान जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं ने निरन्तर प्रयास किए हैं। हिंदी यू.ए.सए., न्यू जर्सी के दो दर्जन स्कूलों में हिंदी सीखाने का कार्य पिछले एक दशक से कर रहा है। संस्था के प्रयासों का ही नतीजा था कि एडिसन स्कूल में हिंदी पाठ्यक्रम भारतीय समाज की पहचान बनकर प्रारम्भ किया गया। टेक्सास में भवानी परपिया के प्रयत्नों से हर्स्ट-यूलेस स्कूल संकुल में अब माध्यमिक कक्षाओं में हिंदी की पढ़ाई प्रारम्भ हो चुकी है। इसी प्रकार युवा हिंदी संस्थान के प्रयत्नों से पेनसिलवेनिया के बेनसेलम स्कूल डिस्ट्रिक्ट में हिंदी को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। सन् 2010 में यह सिलसिला इस प्रस्तुतकर्ता ने न्यू जर्सी के केन विश्वविद्यालय में स्टारटॉक कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी शिक्षण का सिलसिला प्रारम्भ किया था जो कि आज ऑनलाइन पेडागोजिकल हिंदी पाठ्यक्रम के रूप में सफलीभूत हो रहा है। यहाँ उन हिंदी सेवी संस्थानों और हिंदी प्रेमियों की चर्चा उपयुक्त है जो बिना किसी पुरस्कार की अपेक्षा किए अपने समुदाय की अगली पीढ़ी को, जो अमेरिका में पैदा हो कर अमेरिकी परिवेश में बड़ी हो रही है, अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़े रखने का कार्य कर रहे हैं। इनमें अमेरिका के विभिन्न प्रदेशों में सक्रिय चिन्मय मिशन, विश्व हिन्दू परिषद, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, भारतीय मंदिर और अन्य सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाएँ शमिल हैं जो हिंदी को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग मानती है, और बच्चों को भारतीय विरासत के रूप में सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान करती है।

यहाँ अमेरिकी सरकार की दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की चर्चा करना सामयिक होगा। ये कार्यक्रम- स्टेट डिपार्टमेंट यानी विदेश विभाग द्वारा संचालित नेशनल सिक्योरिटी लैंग्वेज इनिशिएटिव फॉर युथ, जो कि स्कूली छात्रों को भारत जाकर हिंदी सीखने और वहाँ के रहन-सहन का अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं, और स्टारटॉक, जो कि गर्मियों में छोटे बच्चों से लेकर कॉलेज विद्यार्थियों को दो या तीन सप्ताह हिंदी की सघन शिक्षा-दीक्षा प्रदान करने का मज़बूत कार्यक्रम है - हिंदी शिक्षा को सफलता की सीढ़ी चढ़ने के लिए सक्षम ढांचा साबित हो रहे हैं। इन दोनों कार्यक्रमों को स्थानीय स्कूल व्यवस्था से अलग रखा गया है ताकि भारतीय समुदाय के हिंदी शिक्षक और स्वयं सेवी संस्थाएँ अपना योगदान दे सकें। एन.एस.एल.वाई. कार्यक्रम एक राष्ट्रीय स्तर का प्रतियोगी कार्यक्रम है जिसमें स्कूल के अंतिम वर्ष के ऐसे विद्यार्थियों का चयन किया जाता है, जो विदेशी भाषा और संस्कृति से परिचित होने की लगनशीलता का प्रदर्शन कर सकते हैं। दूसरी तरफ स्टारटॉक पढ़ने और पढ़ाने दोनों के लिए सुनियोजित

कार्यक्रमों को प्रायोजित करता है, जो कि विद्यार्थियों के लिए पूरी तरह निःशुल्क होते हैं। भारतीय समाज की नयी पीढ़ी को अपनी भाषा से जोड़े रखने का इससे बेहतर अवसर और क्या हो सकता है?

अमेरिकी सरकार की विदेशी भाषा नीति, जिसमें हिंदी के अलावा चीनी, कोरियाई, अरबी, उर्दू, टर्किश आदि कई एशियाई भाषों को लाभान्वित होने की पूरी गुंजाइश है, भारतीय समाज के लिए सकारात्मक प्रोत्साहन जैसी है। अमेरिकी सरकार की यह नीति उस समझ का परिणाम है, जो 9-11 के हादसे के बाद पैदा हुई और सरकार ने महसूस किया कि सिर्फ अंग्रेज़ी के भरोसे विश्व के बदलते आर्थिक-सामजिक परिवेश को प्रभावित नहीं किया जा सकता-हॉलीवुड और अमेरिकी पॉप संस्कृति भी यह कार्य नहीं कर सकते। अमेरिका के बाहर का विश्व सिर्फ अंग्रेज़ी का मुहताज नहीं। यह समझ भारतीय समाज को अपनी भाषा और संस्कृति को विकसित करने और अगली पीढ़ी तक ले जाने के लिए अत्यंत उपुक्त है, जिसका लाभ उठा कर भारत सरकार, उससे सम्बद्ध भाषाई संस्थान और गैर सरकारी एजेंसियों को आगे आ कर अमेरिका के अनौपचारिक क्षेत्र में हो रहे उन तमाम प्रयासों का समर्थन करना होगा जिनसे हमारी भाषा और संस्कृति समृद्ध हो सकती है।

आखिर क्यों ज़रूरी है अमेरिका में हिंदी का प्रचार-प्रसार? जैसे-जैसे भारत की नई पहचान विश्व में उभर रही है, यह प्रश्न अक्सर उठता है। विगत चार दशकों में भारत से आने वाले प्रवासियों का बड़ा वर्ग अंग्रेज़ी के भरोसे अमेरिका में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने में सफल हुआ। लेकिन यह वर्ग अपने सामाजिक जीवन में हिंदी से जुड़ा रहा, जब कि अमेरिका में पली-बढ़ी पीढ़ी हिंदी से दूर रही, यहाँ तक कि उनकी पारिवारिक भाषा भी पूरी तरह हिंदी न रही। उनका हिंदी ज्ञान सामुदायिक पाठशालाओं से कुछ हद तक पूरा हुआ, लेकिन इन स्कूलों की शिक्षा अमेरिकी विदेशी भाषा शिक्षा पद्धति के सभी नियमों का पालन करने में सक्षम नहीं थी। स्टारटॉक ने मानक बनाने और ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों के लिए शिक्षक प्रशिक्षित करने का कार्य कर शिक्षा और शिक्षक के बीच की खाई को पाटने का कार्य किया है। स्टारटॉक का सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा है, अमेरिकन कौंसिल ऑन टीचिंग फॉरेन लैंग्वेज द्वारा विकसित प्रवीणता मानक को हिंदी पाठ्यक्रमों में लागू करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना। इस प्रकार सेंटर फॉर एप्लाइड लिंगविस्टिक ने भाषा प्रवीणता की जांच के मापदंड बनाए। अब यह हम शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है कि इन नियमों और मानकों का प्रयोग कर हम शिक्षार्थियों की ज़रूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम बनायें।

अमेरिका के एक सौ कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों की संख्या में निरंतर कमी और हिंदी के प्रति समाज में व्यापक उदासीनता आज हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने के नए उपाय किये जाएँ,

साथ ही, भारत में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की समस्याओं पर गहरी नज़र डाली जाए। अमेरिका के अनेक प्रदेशों में प्रारम्भ हुए हिंदी कार्यक्रम विभिन्न कारणों से अवरुद्ध हो गए जो कि हिंदी आंदोलन के ऐसे पहलू हैं जिन पर गंभीरता से विचार होना चाहिए। वाशिंगटन प्रदेश का सीएटल स्कूल संकुल, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया लॉस एंजेल्स और केंट यूनिवर्सिटी में हिंदी स्टारटॉक कार्यक्रम पुनः स्थापित करने के लिए हम सबको प्रयास करना चाहिए। अमेरिकी विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण एक तरफ हम जैसे शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है तो दूसरी तरफ भारत स्थित उन संस्थाओं और सरकार की भी, जो इन योजनाओं का समर्थन कर सकते हैं। आखिर अमेरिका में हिंदी सिखाने के लिए प्रामाणिक पाठ्यक्रम मूल सांस्कृतिक परिवेश अर्थात भारत में ही बन सकते हैं।

इन्हीं चुनौतियों पर विचार करने के लिए न्यू यॉर्क स्थित भारतीय प्रदूतावास के सहयोग से न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय, युवा हिंदी संस्थान और अन्य समान विचारधारी स्वयंसेवी संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मलेन का आयोजन किया गया। सम्मलेन में कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए थे:

"21वी सदी में हिंदी भाषा", विषय पर आयोजित सम्मलेन न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय के वाशिंगटन स्क्वायर प्रांगण में हुआ जिसमें भारतीय कौंसुलाधीश राजदूत ज्ञानेश्वर मुले ने इसे वार्षिक स्वरूप देने पर ज़ोर दिया। उन्होंने सम्मेलन में पारित इस भावना का भी समर्थन किया कि अमेरिका में हिंदी शिक्षण की चुनौतियों का सामना करने और हिंदी के प्रचार-प्रसार को अभियान का रूप देने के लिए एक हिंदी केंद्र की स्थापना की जानी चाहिए। सम्मलेन में पारित अन्य प्रस्तावों में हिंदी समाचार पत्र का प्रकाशन और हिंदी शिक्षा के लिए अमेरिका और भारत के बीच एक्सचेंज कार्यक्रमों को स्कूल स्टार पर विस्तारित करने पर ज़ोर दिया गया। इनके अलावा ऑनलाइन हिंदी शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार करने के समर्थन में भी प्रस्ताव पारित हुए।

विश्व हिंदी सम्मलेन के महासचिव और युवा हिंदी कर्मी श्री गुलशन सुखलाल के सतत प्रयासों से अक्टूबर-नवंबर 2014 में आयोजित अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मलेन में न्यू यॉर्क सम्मलेन की गूँज सुनाई दी जिसमें प्रस्ताव संख्या 19 के अंतर्गत न्यू यॉर्क क्षेत्र में हिंदी केंद्र स्थापित करने के साथ-साथ प्रशांत देशों में हिंदी केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से किया गया। भारत सरकार सहित समस्त हिंदी प्रेमियों को यह याद दिलाना उचित होगा कि सम्मेलनों में प्रस्ताव पारित कर उन्हें अमल में लाना अगली पीढ़ी के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी का प्रतीक है, जिसे निभाए बिना हम अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकते, न ही हिंदी को उसका वास्तविक स्वरुप ही प्रदान कर सकते हैं।

अध्यक्ष, युवा हिंदी संस्थान और प्रबंध न्यासी,

हिंदी संगम प्रतिष्ठान, न्यू जर्सी

4 Melville Road, Edison, NJ 08817

Email: aojha2008@gmail.com